Prof Randhir Kr Singh
Asso Prof
Dept of Sociology
Patna College. PU

B.A. Part — I
Paper — II
M-9546991571.

Topic → Folkways, Examine their importance

जन-रीतियाँ व्यवहार के मान्यता प्राप्त ऐसे तरीकों को कहा जाता है जो किसी समूह के सामाजिक जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए अपने आप ही बन जाते हैं। Summer ने अपनी पुस्तक Folkways में लिखा है कि "Frequent repetition of petty acts, often by great numbers acting in concert, or at least acting in the same way when face to face with same needs"

"जन रीतियाँ सर्वाधिक लोगों के छोटे-छोटे कार्यों को निरन्तर बार-बार करने से अथवा एक ही प्रकार की आवश्यकता का पड़ने पर एक ही प्रकार से कार्य करने से ही बनती है।"

वे व्यक्ति को अपने ही पर्यावरण के अनुसार अपने आपको ढालने के अचेतन, स्वाभाविक और uncoordinated प्रयत्न है। इनके अन्तर्गत व्यवहार के वे सभी स्वीकृत तरीके आते हैं जिन्हें व्यक्ति ने सामाजिक जीवन-व्यवहार को सुगम बनाने के लिए बनाया है। वे ऐसे रीति रिवाज हैं जो पुरानी पीढ़ियों ने नयी पीढ़ियों को प्रदान किए हैं और जिनमें निरन्तर बदलती हुई मांगों की पूर्ति के लिए नये-नये तत्व सम्मिलित कर लिए गए हैं। जन-रीतियाँ मानव के अपने आप को ढालने अपने पर्यावरण के अनुसार के विशेष ढंग के परिचायक हैं

Lundberg के अनुसार "रीतियों से अभिप्राय सामूहिक व्यवहार में उन समानताओं से है जो स्वतः और अचेतन ही सामान्य जीवन के अनुसार अपने

आदतों को डालते निकल आ जाती है और प्रयोग और दुहराते रहने से स्थापित हो जाती है।

रीति-रिवाज तथा जन रीतियों में यही भेद है कि यह रीति रिवाज की अपेक्षा अधिक सामान्य और अधिक व्यापक होती है और इनमें व्यवहार के ऐसे तरीके या स्वाभाविक प्रथाएँ (usages) सम्मिलित है जो रीति रिवाज अथवा custom शब्द के अन्तर्गत नहीं आती। जैसे आगमन में हाथ मिलाना, दिन में चार बार भोजन करना, घर के उत्तराधिकार तत्वों तथा कामकाज को इस तरह बाँटना कि पति परिवार का पोषक बने और पत्नि उसपर निर्भर रहे, गौ हत्या न करना. अथवा रात को भोजन करने के बाद शराब पीना आदि रीति रिवाज की अपेक्षा जन-रीतियों के ही उदाहरण है। फिर भी जन रीतियों तथा रीति रिवाज में जो अन्तर है वह अधिकांश में मात्रा का अर्थात् थोड़ा सा अन्तर ही है.

<u>Varieties of Folkways</u> → जन रीतियाँ अनेक हैं। बहुत ही छोटे से छोटे व्यवहार से लेकर बहुत बड़े-बड़े काम भी जनरीतियों के अन्तर्गत आते हैं। उनकी संख्या अनिश्चित है। खान-पान संबंधी जन रीतियाँ बड़ी विभिन्न होती हैं। एक नियम में हिन्दू मांस नहीं खाते बंगाली रोटी के अपेक्षा चावल अधिक पसन्द करते हैं चीनी लोग दही नहीं खाते, यूरोप के महाद्वीप में घोड़े का मांस खाया जाता है परन्तु अमेरिका के लोग इसे नहीं खाते।

भोजन करने से सम्बन्धित जनरीतियाँ भी रोचक है। मद्रास प्रदेश के निवासी एक विशेष ढंग से हाथ से ही चावल खाते हैं परन्तु अन्य प्रदेशों में लोग चावल चम्मच से खाना पसन्द करते हैं। ब्राह्मण रसोई में ही भोजन करते हैं जबकि अन्य जातियाँ [illegible] से

बाहर खाना खाती है। इसी प्रकार विवाह, मृत्यु, काम (sex) पूजा पाठ, भोजन, मनोरंजन, पोशाक (dress) और कला आदि से सम्बन्धित जन रीतियों में भी पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है।

Changing character of folkways →

जनरीतियाँ स्थाई नहीं होती है वरन बदलती हुई परिस्थितियों के साथ-साथ उनमें भी परिवर्तन आता रहता है।

summer ने कहा है कि " यह व्यक्ति द्वारा स्थापित प्राकृतिक शक्तियों के समान है अथवा पशुओं के स्वाभाविक वेगों की तरह हैं जो अनजाने से उत्पन्न हो कर एक हद्दी से पूर्ण अनुकूलन कर लेते हैं। ये पीढ़ी दर पीढ़ी चलते हैं और बिना किसी विभिन्नता के बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार बदल जाते हैं। कुछ जन-रीतियों में परिवर्तन अधिक सतत और तेजी से होते हैं किसी भी जन समूह की परिवार, सम्पत्ति, विवाह आदि विषयक विश्वासों तथा आदर्शों व्यवहारों से सम्बन्धित जन रीतियाँ, अन्य व्यक्तिगत जनरीतियों की अपेक्षा परिवर्तन में अधिक बाधा डालती है। एक व्यक्ति किसी नई पद्धति को अपनाता है, अन्य लोग प्राचीन की अपेक्षा नई व्यवस्था को अधिक उपयोगी मानकर उसे अपना लेते हैं तो निश्चय अन्य व्यक्तियों पर दबाव डालता है और उन्हें भी नवीन पद्धति को अपना लेना अथवा उसी के अनुसार चलना पड़ता है।

जब सभी लोग इसे अपना लेते हैं तो वही जनरीतियाँ बन जाती हैं। जब आप किसी व्यक्ति से पूछे की अमुक प्रकार के विशेष कार्य या व्यवहार क्यों करते हैं तो वह उत्तर देगा कि वह अन्य लोगों का अनुसरण कर रहा है वह व्यवहार को मान्यता प्राप्त मानता है।

जिस प्रकार लोक गीतों और लोक कथाओं की उत्पत्ति और उनके बनाने वालों का पता लगाना कठिन है कि कौन सी रीति कब बनी तथा किसने आरम्भ की। विभिन्न युगों के साथ-साथ राज-रीतियों को इतनी अधिक परिस्थितियों और परिवर्तनों में से गुजरना पड़ता है कि उनका वास्तविक रूप ही बदल जाता है और यह कहना कठिन हो जाता है कि अमुक राज रीति का आरम्भ अमुक व्यक्ति ने किया था।

राजरीतियाँ, सामान्यतः, लोक-विश्वास और भावना प्रवृत्ति नहीं बनाली जाती बल्कि समाज में अज्ञात रूप से अपने आप ही बन जाती हैं। हाँ, जीवन के अन्य क्षेत्रों की भांति, यहाँ भी अपवाद देखने को मिल ही जाते हैं।

राज-रीतियाँ प्रथाओं से भिन्न हैं। राज-रीतियाँ कम महत्वपूर्ण तथ्यों से सम्बन्धित हैं जबकि प्रथायें महत्वपूर्ण क्रियाओं से। परन्तु यह विभिन्नता केवल कुछ मात्रा में ही है, राज-रीतियाँ परिवर्तित होती रहती हैं।

——X——